Vol. 2; Issue 2; May-August 2024; ISSN No. 2583-6994

10

मलिन बस्तियों में बाल श्रमिकों के सर्वांगीण विकास में भारतीय ज्ञान परम्परा एवं समकालीन शिक्षा की अनिवार्यता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

रेनू कुमारी

परविन्द्र कुमार

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन मलिन बस्तियों में निवासित बाल श्रमिकों के सर्वांगीण विकास के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा एवं समकालीन भारतीय शिक्षा की जो अनिवार्यता है, उसको संदर्भित करता है। शैक्षिक ज्ञान मात्र बुद्धि का प्रकाश ही नहीं, बल्कि हृदय की आत्मा एवं मस्तिष्क का सामंजस्य है जो प्राचीन भारतीय ज्ञान दर्शन को आधुनिक समाज में नवीनतम खोजों के साथ एकत्रित करता है। संस्कृत, संस्कृति तथा भारतीयता सिर्फ शब्द नहीं, बल्कि भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली है, जिसमें आत्मीयता का भाव निहित है। 'शिक्षा' मनुष्य के सर्वांगीण विकास, सभ्यता, संस्कृति एवं राष्ट्रीय प्रगति के उत्थान के लिए अनिवार्य है। भारतीय ज्ञान परम्परा आध्यात्मिकता, सांस्कृतिक और दार्शनिक ज्ञान का विशाल भंडार है। यह प्राचीन ज्ञान वेदों, भगवद् गीता, उपनिषदों तथा रामायण आदि ग्रन्थों में विद्यमान है, जो चेतना, नैतिकता, आंतरिक शक्ति तथा वास्तविकता की खोज को प्रदर्शित करता है। समकालीन भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 द्वारा विकसित भारत शिक्षा प्रणाली को लागू किया गया है, जिसमें प्रत्येक सदस्य को बिना भेदभाव के विकसित होने तथा आगे बढ़ने के लिए न्यायसंगत, समावेशी तथा आजीवन ज्ञानार्जन हेतु शिक्षा के एक समान अवसर देना है। जिससे बच्चों में भारतीय ऐतिहासिक ज्ञान परम्परा एवं साहित्य के प्रति विविधता व जागरूकता का सृजन हो सके। आधुनिक युग में मलिन बस्तियों के बाल श्रमिक कमरतोड़ मंहगाई के कारण परिवार की निम्न सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति से जूझ रहे हैं और शिक्षा के अधिकार से वंचित हैं। बाल श्रमिकों के उचित मार्गदर्शन, संतुलित व्यवहार, समाजीकरण व सर्वांगीण

विकास के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि समकालीन और परम्परागत भारतीय शिक्षा का ज्ञान उन्हें पूर्ण ईमानदारी तथा निष्ठा के साथ प्रदान किया जाए। ताकि उनका समुचित विकास हो सके और विनम्रता, अनुशासन, सम्मान, सच्चाई तथा आत्मनिर्भर आदि मूल्यों पर ध्यान आकर्षित करके जीवन के मूलभूत अधिकारों के प्रति सचेत होकर अपने साथ होने वाले शोषण के खिलाफ आवाज उठा सके।

मुख्य शब्द– मलिन बस्तियाँ, श्रम, बाल श्रमिक, सर्वांगीण विकास, भारतीय ज्ञान परम्परा व समकालीन शिक्षा।

प्रस्तावना

आज औद्योगिकवादी समाज में प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको आगे बढ़ते देखने की चाह रखता है। औद्योगीकरण ने नगरीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान की है। नगरीकरण भारत में तकनीकी शिक्षा का उपयोग समाज के हर क्षेत्र में हो रहा है। एक तरफ सूचना प्रौद्योगिकी ने तीव्रगति से विकास किया है, वहीं दूसरी तरफ आम आदमी का शोषण भी तेजी से हुआ है। बेकारी, भुखमरी, गरीबी, सुख, समृद्धि, शैक्षिक ज्ञान आदि उपयोगी वस्तुओं के अभाव ने शोषित एवं वंचित लोगों का एक वृहद् समाज उत्पन्न किया है। उनमें से एक है नगरीय मलिन बस्तियाँ तथा उनमें निवासित बाल श्रमिक, जो आज अपने जीवन की छोटी से छोटी जरूरतों को पूर्ण करने के लिए सुबह से शाम तक कठिन परिश्रम करते हैं। श्रम में नियोजित मलिन बस्ती के बाल श्रमिक शिक्षा के प्रति अभिरूचि रखते हैं लेकिन श्रम की हानिकारक परिस्थितियाँ उन्हें शिक्षा के अधिकार से वंचित रखती हैं। इस प्रकार शिक्षा प्राप्त करना उनके लिए मात्र एक सपना बनकर रह जाता है। भारत में जीवन यापन करने वाले हर एक भारतीय के लिए प्रज्ञा का प्रतीक है, भारतीय ज्ञान परम्परा। इस भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्ञान तथा विज्ञान, कर्म तथा धर्म, भोग तथा त्याग एवं लौकिक व पर–लौकिक का अद्भुद समंवय निहित है। प्राचीन काल से ही शैक्षिक ज्ञान हेतु भारतीय ज्ञान परम्परा का दृष्यिांत अत्यंत व्यापक रहा है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा जो भारतवर्ष में प्राचीन समय से चली आ रही 'शिक्षा प्रणाली' है, उसके अध्यापन, अध्ययन हेतु प्रमुख बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, भारतीय सनातन ज्ञान व विचारों की समृद्धता के आलोक में बनाई गई है। शिक्षा नीति–2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा को जोड़ने हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अभिनव पहल प्रदान की है। इस पहल में अनुशासित विषयों में भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ संबंधित संप्रत्ययों का जुड़ाव है, जिनके अध्ययन से निश्चित् रूप से आने वाली पीढ़ी के शिक्षार्थियों में भारतीय होने की एक गौरवशाली भावना जागृत होगी। आधुनिक युग में डिजिटलीकरण ने मानव को शिक्षा के नवीन आयाम, ज्ञान–विज्ञान, भौतिक संसाधन एवं नई तकनीकी को प्रदान किया है। वहीं श्रमिक बच्चों का कम्प्यूटर, मोबाइल, टेलीविजन तथा अन्य सूचना संचार तकनीकी से दूर–दूर तक नाता नहीं होता है। बाल श्रम समाज में प्रत्येक युग में विद्यमान रहा है। इस प्रकार निम्न सामाजिक–आर्थिक पिछड़ापन, जागरूकता तथा ज्ञान का अभाव आदि कारण बाल श्रमिकों कों डिजिटल प्रौद्योगिकी की सेवा तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के शैक्षिक ज्ञान का उपयोग करने से वंचित करते हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा

भारतीय समाज में प्राचीन काल से भारतीय ज्ञान परम्परा का विशिष्ट उद्देश्य शैक्षिक तथा व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति हेतु विद्यार्थियों का पारंपरिक ज्ञान द्वारा उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना, उन्हें समाजोपयोगी व मोक्षगामी बनाना है। भारतीय संस्कृत व संस्कृति का मूल स्तंभ ही भारतीय ज्ञान परम्परा है। भारतीय ज्ञान परम्परा वेद, वेदांग, श्रुति, स्मृति तथा उपनिषद् से लेकर अनेक धर्मशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, दर्शनशास्त्र, नाट्यशास्त्र, विज्ञान एवं प्रबंधन विद्याशाखा आदि का विशाल भंडार है। भारतीय ज्ञान परम्परा को ज्ञान, प्रबोध, प्रज्ञा, शिक्षा, विद्या, भारती तथा दर्शन इत्यादि शब्दों से परिभाषित किया है। भारतीय ज्ञान परम्परा के स्वर्णिम इतिहास के अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त होती है कि प्राचीन समय में भारतीय शिक्षा प्रणाली ने मानव के सार्वभौमिक विकास हेतु ध्यान आकर्षित किया तथा सच्चाई, अनुशासन, विनम्रता, सम्मान तथा आत्मनिर्भता जैसे मूल्यों को प्रमुखता दी है। भारतीय शिक्षा का स्वरूप जीवन में उपयोगी तथा व्यावहारिकता की प्राप्ति करने योग्य है। भारतीय संस्कृति के संवर्धन एवं संरक्षण हेतु भारतीय ज्ञान परम्परा का ज्ञान प्राप्त करना परम आवश्यक है। रामायण, महाभारत, सम्पूर्ण वैदिक–वांगम्य, धर्मग्रंथ, दर्शन, स्मृतिग्रंथ, पुराण, व्याकरण, ज्योतिषशास्त्र तथा काव्य संस्कृति भाषा में उपलब्ध होकर, इन सभी की महिमा को दर्शते हुए वृद्धि करते हैं, जो भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता की रक्षा करने हेतु पूर्णरूप से सहायता प्रदान करते हैं। संस्कारवान समाज के निर्माण में संस्कृत का प्रमुख स्थान है। संस्कारों से मानसिक, पवित्रता, कायिक वाचिक के साथ–साथ पर्यावरण भी स्वच्छता प्राप्त करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेशन

भारतीय ज्ञान प्राचीन सिद्धान्तों को वर्तमान में शिक्षा प्रणाली में समंवित करने से समृद्ध एवं अधिक सन्तुलित अनुभव प्राप्ति में सहायता मिल सकती है। धर्मशास्त्र जो भारतीय दर्शन में अधिकारों, कर्त्तव्यों, गुणों, आचरण तथा जीवन व्यतीत करने के सही निर्देशों को संदर्भित करता है। बच्चों को धर्मशास्त्र से संबंधित ज्ञान प्रदान करने से उनमें नैतिक जीवन जीने, नैतिक जिम्मेदारी, नैतिक व्यवहार की भावना को उत्पन्न करने में सफल सिद्ध हो सकती है। आज औद्योगिकवादी समाज में यह मूल्यपरक शिक्षा मुख्य रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि वर्तमान समाज में प्रौद्योगिकी, राजनीति तथा पर्यावरण सहित अनेक क्षेत्रों में नैतिक मुद्दे तीव्रता के साथ सामने नजर आ रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अन्तर्गत बहुभाषावाद की अनिवार्यता को दर्शाते हुए शिक्षा के समस्त स्तरों पर जीवन यापन करने की मुख्य धारा में संस्कृत को सम्मिलित कर उसे अपनाने पर विशेष बल दिया है। अतः संस्कृत के अध्ययन से छात्र–छात्राएं स्वयं के अतीत से गौरंवित होगें और साथ ही वर्तमान समाज में सदाचरण, संतुलित व्यवहार की तरफ अग्रसर होकर अपने भविष्य के लिए भी उल्लासित तथा उत्साहित होगें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 समाज में ऐसी शिक्षा प्रणाली है, जिसमें प्रत्येक शिक्षार्थी सामाजिक–आर्थिक, नैतिक, बौद्धिक तथा अन्य किसी भी भेदभाव के कारण पिछड़गा नहीं। इस शिक्षा नीति में सर्वशिक्षा अभियान को समग्रता पूर्वक शिक्षा के स्वरूप में परिभाषित कर वर्ष 2030 तक समस्त

बच्चों को प्राथमिक विद्यालयों में 100 प्रतिशत नामांकन कराने हेतु लक्ष्य निर्धारित किया है, जो भारत को नवीन शिक्षा प्रदान करेगा (एनईपी–2020)। भाषा की असंगतता को खत्म करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने सभी शिक्षार्थियों की प्राथमिक स्कूली शिक्षा को स्थानीय भाषा (गैर हिन्दी प्रदेशों के लिए या मातृभाषा हिंदी) में पढ़ाने की बात को रखा है। जिससे बच्चों को मूल्यों तथा मूलभूत आवश्यकताओं को समझने व जानने में आसानी होगी। इसके अतिरिक्त बच्चे अपनी जरूरी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सफलता प्राप्त कर सकेगें।

अध्ययन का महत्व

शिक्षा एक आजीवन चलने वाली क्रिया है, जो राष्ट्र, समाज तथा व्यक्ति के विकास में मुख्य भूमिका निभाती है। इस शिक्षा नीति का मुख्य लक्ष्य सम्पूर्ण देश तथा मनुष्य के उचित विकास हेतु शिक्षा की अनिवार्यता की आवश्यकता को पूर्ण करना है। यह शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परम्परा के समंवय को संदर्भित करती है। शिक्षा नीति भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं परम्पराओं को बनाए रखने के लिए 21वीं शताब्दी की शिक्षा हेतु आकांक्षात्मक लक्ष्यों जिसके अंतर्गत एसडीजी 4 सम्मिलित है, जिसके संयोजन में शिक्षण, व्यवस्था, गवर्नेस तथा शिक्षा के नियम सहित समस्त पक्षों पर सुधार एवं पुनर्गठन की योजना का प्रस्ताव रखती है। यह नीति इस सिद्धांत को महत्व देती है कि शिक्षा से साक्षरता, संख्याज्ञान, उच्चतर स्तर तथा बुनियादी क्षमताओं का तार्किक विकास, संज्ञानात्मक क्षमता तथा समस्या समाधान से संबंधित विकास होने के साथ–साथ सामाजिक, नैतिक तथा भावात्मक रूप से भी मनुष्य का विकसित होना बहुत जरूरी है। आज 21वीं सदी के डिजिटल युग में विभिन्न ऐसे वर्ग तथा समूह हैं, जो शिक्षा के ज्ञान से अनभिज्ञ हैं। शिक्षा से वंवित समूहों में मलिन बस्तियों के बाल श्रमिकों का एक वर्ग शामिल है। शिक्षा का अभाव बाल श्रमिकों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, उसके उचित विकास को अवरुद्ध करता है और इस प्रकार बाल श्रमिक गुणवत्तापूर्ण तथा कौशलपूर्ण शिक्षा जो उनके उचित विकास हेतु महत्वपूर्ण होती है, उस ज्ञान से वंचित हैं। अतः ज्ञान के अभाव में बाल श्रमिक अपनी संस्कृति, मूल्यों, परम्परा, साहित्य, दर्शन, काव्य, संगीत, सदाचरण, वेदों तथा अपने मूल अधिकारों से जागरूक नहीं हो पाते हैं और समाज में एक अज्ञानी का जीवन जीने को विवश होते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से मलिन बस्तियों में निवासित बाल श्रमिकों के सर्वांगीण विकास हेतु भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सनातन ज्ञान तथा वर्तमान ज्ञान को समंवित करके बाल श्रमिकों के लिए शैक्षिक ज्ञान की अनिवार्यता को प्रदर्शित किया है।

साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन

- **पाण्डेय, योगेष कुमार (2005)** ने बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा की जो उपयोगिता है उसका विस्तृत वर्णन किया है। बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षा तथा संस्कारों का मुख्य योगदान होता है। बच्चों को जिस प्रकार का माहौल, संस्कार तथा शिक्षा मिलती है, उसी के अनुसार उनके व्यक्तित्व का विकास होता है। निराश्रित, अनाथ, परित्यक्त, बेसहारा एवं श्रमिक बच्चों को अनेक विषम परिस्थितियों

का सामना करना पड़ता है। श्रमिक बच्चे अल्पायु से ही श्रम में सम्मिलित हो जाते हैं। उन्होनें बाल श्रमिकों के उचित मार्गदर्शन हेतु उनके उचित पुनर्वासन पर बल दिया है और अनिवार्य शिक्षा को महत्व दिया है जो बाल श्रम को समाप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

- **नरसिंगप्पा, एच.एस. (2017)** ने अपने अध्ययन में बताया है कि मलिन बस्ती में रहने वाले बच्चों की स्कूल जाने की बहुत कम सम्भावना होती है। सामान्य नागरिकों की अपेक्षा मलिन बस्ती के निवासित बच्चे स्कूलों में नामांकन बहुत कम कराते हैं और साथ ही शिक्षा भी बीच में छोड़ने को मजबूर होते हैं। अंत में स्पष्ट किया है कि मलिन बस्ती के स्कूलों में छात्रों की संख्या का अनुपात अधिक होता है, गुणवत्ता एवं समुचित संसाधनों का अभाव भी मलिन बस्ती वासियों में अशिक्षा का मुख्य कारण है।
- **यादव, अनुभूति (2019)** ने अपने अध्ययन में आईसीटी तथा भारतीय शिक्षा प्रणाली के समक्ष जो चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएं हैं, उनका वर्णन किया है। प्राचीन भारत में सभ्यता के शुभारंभ से ही शैक्षिक व्यवस्था भी निश्चित् दायरे में पहँच विकसित करने तथा विस्तार करने की कार्य प्रणाली में संलग्न है। देश अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाने तथा बढ़ावा देने हेतु शिक्षा व्यवस्था का विकास करता है। इतिहास में विभिन्न ऐसी घटनाएं विद्यमान है, जब एक प्राचीन प्रक्रिया को नवीन दिशा देने के लिए काम किया गया। वर्तमान समय में वही पल आज हमारे समक्ष मौजूद हैं। आईसीटी का स्कूली शिक्षा में होना समाजोपयोगी मांग है, क्योंकि यह भारतीय शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों से निपटने में मुख्य भूमिका निभा सकती है।
- **सिंह, अविनाश कुमार (2022)** ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में छात्र केन्द्रित शिक्षा के जो लक्ष्य निर्धारित किए हैं उनका अध्ययन किया है। यह नीति मानवाधिकारों, जीवनशैली, वैश्विक कल्याण तथा संवहनीय विकास हेतु प्रतिबद्धता बढ़ाने के लिए ज्ञान, मूल्य–आचरण तथा कौशल स्थापित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रमुख प्रयास शिक्षार्थियों को वैश्विक नागरिक बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इसकी मुख्य भूमिका शिक्षार्थियों में बुद्धि कार्यो, विचारों तथा भावनाओं में भारतीय होने के गौरव को विकसित करना है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए द्वितीयक स्त्रोतों द्वारा आँकड़ों का संकलन किया गया है। प्राप्त आँकड़ों के आधार पर ही सम्पूर्ण शोध अध्ययन का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं–

1. मलिन बस्तियों में निवासित बाल श्रमिकों के सर्वांगीण विकास में भारतीय ज्ञान परम्परा एवं समकालीन शिक्षा की अनिवार्यता का अध्ययन करना।

2. मलिन बस्तियों में बाल श्रमिकों के शैक्षिक स्तर तथा अभिरूचि का अध्ययन करना।

1. मलिन बस्तियों में निवासित बाल श्रमिकों के सर्वांगीण विकास में भारतीय ज्ञान परम्परा एवं समकालीन शिक्षा की अनिवार्यता– शिक्षा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करती है तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष तरीके से उसके विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। अर्थात् शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व में अहम भूमिका निभाती है। इस प्रकार शिक्षा मनुष्य के व्यवहार एवं आचरण की उचित मार्गदर्शक होती है और उसे समाज का उपयोगी व्यक्ति बनाने हेतु सहायता करती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य वर्तमान समय में सभ्यता के उच्च शिखर पर पहुँचने में सफल हुआ है। बालकों का समाजीकरण शिक्षा का प्रतिफल होता है। शिक्षा बालकों में सामाजिक दक्षता उत्पन्न करके उनमें समाज में विद्यमान विभिन्न संस्कृति, धर्मों, रीति–रिवाजों से अवगत करा कर उन्हें सामाजिक जीवन जीने के लायक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल में शिक्षा की जो भूमिका रही है वह अतुल्यनीय है। सामाजिक स्वरूप के साथ समाज के बदलते स्वरूप के साथ–साथ शिक्षा का स्वरूप भी बदलता रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 डिजिटल साक्षरता, सभ्यता, समाधान, लिखित संचार, तार्किक तर्क, व्यावसायिक प्रदर्शन, धर्मशास्त्र, तथा बहुविषयकता पर अधिक जोर डालती है। यह शिक्षा नीति समाज में सभी के लिए एक समान शिक्षा, बिना भेदभाव के प्रदान करने पर जोर देती है। लेकिन इस योजना का लाभ लेने में आज भी अनेक ऐसे वंचित वर्ग हैं, जो उचित शिक्षा प्रणाली तथा कौशलयुक्त ज्ञान से वंचित हैं। उनमें से एक वर्ग मलिन बस्तियों के बाल श्रमिकों का है, जो इस शिक्षा नीति के लाभ से अंजान है। मलिन बस्तियों में आज भी बच्चे कुपोषण, भूख तथा अशिक्षा जैसी परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं। उनके पास एक तरफ शिक्षा प्राप्त करने के लिए शिक्षण सामग्री का अभाव है तो वहीं दूसरी तरफ अध्ययन के लिए समय का अभाव। सुबह से देर शाम तक श्रम करके घर वापस लौटते हैं और अगले दिन सुबह फिर श्रम के लिए रवाना हो जाते हैं। इस प्रकार बाल श्रमिकों की सामाजिक–आर्थिक निम्न स्थिति तथा श्रम के दुष्चक्र में फँसे इन श्रमिक बच्चों की शिक्षा तक पहुँच का अभाव पाया जाता है। परम्परागत ज्ञान तथा आधुनिक ज्ञान, जिसमें संस्कृति, संस्कार, दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, विद्याशास्त्र, वेद, उपनिषद, तार्किकता, प्रबोध, प्रज्ञा, लौकिक–अलौकिक, बहुभाषायी ज्ञान इत्यादि जो बाल श्रमिकों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। बाल श्रमिकों का परम्परागत तथा आधुनिक ज्ञान के साथ समंवय करने की मुख्य आवश्यकता है। जिससे बाल श्रमिकों का सर्वांगीण विकास हो और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर श्रम से बाहर निकलकर एक स्वतंत्र जीवन की शुरूआत करने में सफलता प्राप्त कर सकें।

2. मलिन बस्तियों में बाल श्रमिकों का शैक्षिक स्तर तथा अभिरूचि– प्राचीन काल में बाल श्रमिकों को खेतों में श्रम कराया जाता था और आज औद्योगिकीकरण तथा नगरीकरण के विस्तार ने विभिन्न व्यवसायों, उद्योगों में बाल श्रमिकों को नियोजित किया जा रहा है। भारत में इस नगरीकरण के युग में ऐसा कोई नगर नहीं है, जहाँ मलिन बस्तियाँ न पायी जाती हो। मलिन बस्तियों में अधिकतर मेहनत–मजदूरी करने वाले लोग निवास करते हैं, जो अधिक

मेहनत करने के बाद भी अल्प मजदूरी, प्राप्त करते हैं और उसी के सहारे परिवार का लालन–पालन करते हैं। परिवार के एक सदस्य की मजदूरी से परिवार के समस्त सदस्यों की आवश्यकताओं को पूर्ण करना उनके लिए मुश्किल होता है। यही कारण है कि मजदूर माँ–बाप अपने साथ अपने नाबालिग बच्चों को भी श्रम करने के लिए प्रेरित करते हैं। भारत स्वतंत्र अवश्य हो गया है, किंतु बाल श्रमिक अभी भी स्वतंत्र नहीं हैं। वे नियोक्ताओं के शोषण से पीड़ित हैं। स्वतंत्रता के बाद भी बाल श्रमिक अपने दार्शनिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक घनिष्ठता एवं समंवय से अधिक दूर हैं। बाल श्रमिकों के विकास तथा भारतोदय के लिए ज्ञान को जानने, समझने तथा फैलाने के लिए श्रमिक बच्चों को शिक्षा के साथ जोड़ने की परम आवश्यकता है। आदि काल से भारत अपनी संस्कृति, धर्म–ग्रंथों तथा बहुभाषायी गुण हेतु प्रसिद्धि हासिल किए हुए है। जो हर व्यक्ति को देश की अपनी संस्कृति से विरासत के रूप में प्राप्त हुए हैं। औद्योगिक युग में बालक अपने व्यवहार, ज्ञान, कौशल द्वारा स्थायी विकास, वैश्विक कल्याण तथा समृद्ध जीवन यापन के प्रति वचनवद्ध बनने में सफल होगें तभी उसे वैश्विक नागरिक की शिक्षा दी जा सकती है। बालक जिस प्रकार के वातावरण में रहते हैं, उसी के अनुसार आचरण करते हैं अर्थात् स्वयं को आत्मसात करते हैं। यही प्रमुख कारण है भारतीयों में भारतीय संस्कृति के प्रति आत्मभाव अपने आप लक्षित होते हैं। मलिन बस्तियों के बाल श्रमिक शिक्षा के प्रति संवेदनशील हैं किंतु कुछ परिस्थितियाँ हैं, जो उन्हें शिक्षा से दूर करती हैं। दिन–रात कठिन श्रम करते हैं और बदहाल सामाजिक–आर्थिक स्थिति में वे चाहते हुए भी शिक्षा तक पहुँच बनाने में असमर्थ होते हैं। इस प्रकार बाल श्रमिकों का शिक्षा के अभाव में सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है।

निष्कर्ष

अतः अन्त में शोध अध्ययन के पश्चात् निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि समकालीन भारतीय समाज के मध्य शिक्षा का स्वरूप अधिक व्यापक होता जा रहा है। इसके बाद भी शैक्षिक क्षेत्र में विभिन्न चुनौतियों का बड़ा अंबार लगा हुआ है ऐसे उपायों को तलाशना हमेशा जारी रहता है, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन ला सके। मानव के विकास में शिक्षा का बहुमूल्य योगदान है, जो राष्ट्र के सामाजिक–आर्थिक विकास के संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भारतीय परम्परागत ज्ञान के एकीकरण, समग्र दृष्टिकोण तथा सीखने हेतु अधिक संतुलन को दर्शाती है। यह बौद्धिक क्षमता वाले व्यक्तियों को ही नहीं बल्कि नैतिकता परक, भावात्मकता से परिपक्व तथा आध्यात्मिकता से जागरूक नागरिक को पोषित करने के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा प्रणाली से व्यक्तिगत शिक्षार्थी तो लाभांवित होगे और साथ ही अधिक सामांजस्यपूर्ण, टिकाऊ तथा दयालु दुनिया को निर्मित करने में योगदान देगी। बाल श्रम बच्चों के शैक्षिक स्तर, कौशल अधिग्रहण हेतु विनाशकारी, दीर्घकालीन परिणाम उत्पन्न करता है। इस स्थिति को देखते हुए प्रमुख आवश्यकता है, बच्चों को श्रम में शामिल होने से रोकना तथा श्रमिक बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए उनको भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ आधुनिक ज्ञान को प्रदान करना। बाल श्रमिकों के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक है उनकी अधूरी शिक्षा, खराब गुणवत्तापूर्ण कार्य,

गरीबी, भुखमरी तथा शोषण के कुचक्र का समाप्त करना यदि हमें अच्छे मूल्यों तथा मौलिकता के आधार पर समाज को निर्मित करना है, तो बाल श्रमिकों के प्रति जो नकारात्मक सोच तथा अन्याय है उसे जड़ से खत्म करने की प्रमुख आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- पण्डेय, योगेश कुमार, 2005, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और बाल विकास, सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पीपी.–198–199।
- सरदार, राम, जुलाई 2014, समकालीन भारत और शिक्षा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्च इन साइंस इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी, अयोध्या (उ.प्र.), वॉल्यूम–3।
- सिंह, निरंकार एवं हुसैन, दिलदार, जनवरी 2014, बाल श्रम का सामाजिक विश्लेषण, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमिनिटीज एण्ड सोशल साइंस इंवेंशन, पीपी.–65।
- नरसिंगप्पा, एच.एस., 2017, स्लम एजूकेशन इंपॉर्टेंस ऑफ प्रेजेंट एंड फ्यूचर सिनेरियो, अर्बन प्रॉवर्टी एण्ड सोशल एक्सक्लूजन, स्प्रिंग लीफ पब्लिकेशन्स, मिजोर, पीपी. 336–340।
- यादव, अनुभूति, 2019, आईसीटी और भारतीय शिक्षा प्रणालीः चुनौतियां और सम्भावनाएं (एडि.) नारायण, सुनेत्रा सेन एवं नारायण, शालिनी, इण्डिया कनेक्टेड (न्यू मीडिया के प्रभावों की समीक्षा), सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पीपी.–194।
- सिंह, अविनाश कुमार, फरवरी 2022, शैक्षिक सुधार राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, (एडि.) कमल, कुलश्रेष्ठ एवं रानी, ममता, योजना, पीपी. 7–10।
- सिंह, गीता, जनवरी–फरवरी 2022, भारतीय ज्ञान परम्परा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में प्रासंगिकता, एएमआईईआरजे आर्हत मल्टीडिसीप्लिनरी इंटरनेशनल एजुकेशन रिसर्च जर्नल, पीपी. 10–14।
- सिरोला, देबाकी एवं सिरोला, सागर सिंह, अप्रैल 2024, भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसीप्लिनरी रिसर्च, पीपी. 1–2।
- https://slsa.uk.gov.in
- https://medium.com
- https://www.jagran.com
- www.bureaucracytimesgroup.page

रेनू कुमारी (समाजशास्त्र), शोध छात्रा, समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग, संकायः समाज विज्ञान, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग आगरा–282005
ईमेलः **renukumaridei7@gmail.com**

परविन्द्र कुमार (असिस्टेंट प्रोफेसर), समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग, संकायः समाज विज्ञान, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग आगरा–282005
ईमेलः **parvindra8@gmail.com**